

BHDE-101/ई.एच.डी.-01 –
हिंदी गद्य

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2023 एवं जनवरी, 2024 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी.-01 / बी.एच.डी.ई.-101
हिन्दी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम



मानविकी विद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

हिन्दी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम-03 सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी.-01/बी.एच.डी.ई.-101

प्रिय छात्र/छात्राओ!

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। यह पाठ्यक्रम हिन्दी संरचना पर आधारित है। इसके अध्ययन के उपरांत आप हिन्दी संरचना के विविध को समझ सकेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक :

नाम :

पता :

.....

.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :

सत्रीय कार्य कोड :

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :

दिनांक :

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :

जुलाई 2023 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2024
जनवरी 2024 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर 2024

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से दो तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्न। इन प्रश्नों के उत्तर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं।

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
 - ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
 - ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो अपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
 - घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
 - ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
 4. **विशेष** : अपने उत्तर की फोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 7 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी.-1/बी.एच.डी.ई.-101
सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.डी.-1/बी.एच.डी.ई.-101/टी.एम.ए./2023-24
कुल अंक : 100

भाग 'क'

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन गद्यांशों की संदर्भ व्याख्या कीजिए। **10×3=30**

- (क) चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।
- (ख) जीवन, तुमसे ज्यादा असार भी दुनिया में कोई वस्तु है? क्या वह उस दीपक की भांति क्षणभंगुर नहीं, जो हवा के एक झोंके से बुझ जाता है। पानी के एक बुलबुले को देखते हो लेकिन उसे टूटते भी कुछ देर लगती है, जीवन में उतना सार भी नहीं। साँस का भरोसा ही क्या और इसी नश्वरता पर हम अभिलाषाओं के कितने विशाल भवन बनाते हैं। नहीं जानते जाने वाली साँस ऊपर आयेगी या नहीं; पर सोचते इतनी दूर की हैं, मानो हम अमर हैं।
- (ग) अरे भाई उन दिनों हमारे लिए तो वे कालिदास और शेक्सपियर के बराबर थे। उनके नाटक पढ़कर और मुहल्ले के एक रसीली आवाज वाले लड़के से उनके गाने सुनकर हम उनकी कला का रसास्वादन कर लिया करते थे।
- (घ) निर्लज्ज! मद्यप!! क्लीव!!! ओह, तो मेरा कोई रक्षक नहीं? (ठहर कर) नहीं, मैं अपनी रक्षा स्वयं करूंगी। मैं उपहार में देने की वस्तु, शीतल-मणि नहीं हूँ। मुझमें रक्त की तरल लालिमा है। मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्म सम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करूंगी।
- (ङ) जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर वह यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कौसी जगह पर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों से अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायेगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जाएगी। अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे।

भाग 'ख'

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **15×4=60**

- (क) नाटक के मुख्य तत्वों पर प्रकाश डालिए।
- (ख) 'निर्मला' उपन्यास का चरित्र चित्रण की विधियों के आधार पर मूल्यांकन कीजिए।
- (ग) 'ध्रुवस्वामिनी' की कथावस्तु का विश्लेषण कीजिए

- (घ) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।
(ङ) 'परदा' कहानी के संरचना शिल्प पर टिप्पणी लिखिए।
(च) 'आकाशदीप' कहानी के परिवेश का मूल्यांकन कीजिए

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

5×2=10

- (क) कहानी की संरचना और शिल्प
(ख) रेखाचित्र और संस्मरण
(ग) प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास
(घ) रेडियो नाटक
(ङ) 'जोंक' एकांकी में चरित्र-चित्रण
(च) निबंध के भेद